प्रेसनोट डाट इन

औरतों के पहुंच से दूर रोटी - नागा

(267 बार पढ़ी गयी)

Published on : 18 Oct, 13 16:10

सामान्यतः लोग गेहूं, बाजरा व मक्का का प्रयोग करते हैं। इस समय इन्हें दो वक्त का भरपेट भोजन भी नहीं मिल पा रहा है। सबसे बुरा असर छोटे बच्चों व महिलाओं पर पड़ रहा है। सहरिया व खैरुआ औरतों की स्थिति पुरुषों के मुकाबले कहीं ज्यादा दयनीय और चिंताजनक है। औरतों को रोटी की जबरदस्त किल्लत का सामना करना पड़ता है। परिवार में जब भी भूखे रहने की बात आती है तो उसका पहला भार इन औरतों पर पड़ता है। जब खाना कम पड़ जाए तो परिवार में औरत को ही भूखा रहना पड़ता है। " विविधा महिला आलेखन एवं संदर्भ केंद्र" की ओर से पिछले दिनों किए गए एक अध्ययन से एक बात स्पष्ट उभर कर सामने आई कि रोजी रोटी के इर्द गिर्द घूमती इन सहरिया व खैरुआ औरतों की जिंदगी के दूसरे सभी पक्ष इसी से नियंत्रित हो रहे हैं। आजीविका की अनिश्चता शरीर को एक तरह से प्रभावित कर रही है तो मन को दूसरी तरह से। घर में सबसे अंत में खाने वाली औरत अनिश्चितता की स्थिति में सबसे पहले खुद के खाने में कटौती करती है। खाने की यह कटौती उसको कुपोषण की तरफ धकेलती है, कुपोषण बीमारी की तरफ। क्षेत्र की करीब 100 सहरिया महिलाओं से उनके खान पान को लेकर सवाल किए गए। औरतों ने बताया कि जापे में पौष्टिक आहार उन्हें नहीं दिया जाता। पशु हैं तो भी दूध और छाछ का प्रयोग इनके भोजन से गायब है। पुरुषों के खाने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। बेटी बेटा के खान पान में भी अंतर है। इस कारण महिलाओं के हिस्से बचा कुचा अपर्याप्त और बासी खाना ही आता है। दूध सिर्फ 40 प्रतिशत महिलाएं उपयोग में लेती हैं। अधिकांशतः बाद में भोजन करने वाली औरतों को जरूरत के अनुसार हर चीज नहीं मिल पाती। अगर सब्जी नहीं बचती या चपाती कम होती है तो कम या चटनी से खा लेती हैं। कभी पूरा खाना मिल जाता है तो कभी नहीं मिल पाता।

© CopyRight Pressnote.in | A Avid Web Solutions Venture.